ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 248-251

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

विविध धर्मों के वैचारिकता के दायरे में प्रकृति व पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 सरोज कुमार राही

असि0 प्रोफेसर–बी0एड0 – डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय ढिंढुई, प्रतापगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received-15.12.2022, Revised-20.12.2022, Accepted-26.12.2022 E-mail: drskrahistp@gmail.com

सारांशः ***"सनातन (हिन्दू) धर्म और पर्यावरण संरक्षण" हिन्दू धर्म के महान संत व पर्यावरण संरक्षक एवं 'विश्नोई पंथ' के संस्थापक 'श्री जम्भेश्वर'जी महाराज को दुनिया पहला पर्यावरण वैज्ञानिक माना का जाता है। इनके द्वारा स्थापित 29 नियमों एवं 120 उपदेशों में 'वन एवं वन्यजीव' तथा पर्यावरण बचाने को प्रमुखता दी गई है इसीलिए विश्नोई समाज गुरू उपदेशों के पालनार्थ पर्यावरण से गहरी संवेदना रखता है***

सनातन (हिन्दू) धर्म से तात्पर्य सनातन का अर्थ है– शाश्वत् या सदा बना रहने वाला: अर्थात् 'जिसका न आदि है, न अन्त।" तात्पर्य यह है कि सनातन धर्म पूर्णता के शाश्वत विचार का प्रतिनिधित्व करता है। सनातन धर्म की महानता इसकी लोचशीलता में है, सहिष्णुता ही इसकी मूल विशेषता है।

कुंजीभूत शब्द– सनातन धर्म, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण संरक्षक, विश्नोई पंथ, पर्यावरण, वन्यजीव, शाश्वत्, सहिष्णुता।

सनातन (हिन्दू) धर्म की वैदिक एवं वैदिकोत्तर परम्पराओं में पर्यावरणीय पुट– 'सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहा जाता है और यह 6000 साल का इतिहास है। भारत की 'सिन्धु घाटी सभ्यता' में हिन्दू धर्म के कई चिन्ह मिलते हैं: जिनका बारीकी से विश्लेषण करने पर पर्यावरणीय दृष्टिकोण नजर आता है। उदाहरणार्थ– मिट्टी का प्रयोग मूर्तियाँ बनाने में, लिंग एवं पीपल वृक्ष की पूजा, उनकी नगर योजना जिसमें मोहनजोदड़ो, राखीगढ़ी, कालीबंगा जैसे शहरों का उल्लेख वांछनीय है, जहाँ उत्तम जल की व्यवस्था सहित जल संरक्षण हेतु वृहद स्नानागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। बात यदि वैदिक सभ्यता की की जाए तो 'वैदिक समाज' में प्रकृति पूजा का अद्वितीय स्थान है। प्रकृति को माता की उपाधि से अभिभूत किया गया है जिसे ऋग्वेद के निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है। "यह पथ सनातन है। समस्त देवता और मनुष्य इसी मार्ग से पैदा हुए हैं तथा प्रगति की है। हे मनुष्यों आप अपने उत्पन्न होने की आधाररूपा अपनी माता को विनष्ट न करें।" ('ऋग्वेद') वैदिक धर्म : सूर्य उपासना– प्राचीन काल में भारतीय सनातन धर्म में, गाणपत्य, शैवदेव, वैष्णव, शाक्त और सौर नामक पाँच सम्प्रदाय होते थे। गाणपत्य गणेश जी की, वैष्णव– विष्णु जी की, शैवदेव शिव की, शाक्त शक्ति की एवं 'सौर सम्प्रदाय' 'सूर्य' की पूजा/आराधना किया करते थे। 'सूर्य' जो इस चराचर जगत में सभी प्रकार की ऊर्जाओं का स्रोत है, वैदिक काल में उन्हें देवता मानकर उसकी आराधना की जाती थी। सनातन सभ्यता के सभी प्रतिनिधि ग्रन्थों जैसे वेद, पुराण, श्रुति, स्मृतियाँ, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि में पर्यावरण का सम्पुट मौजूद है जिनका उद्देश्य मनुष्य एवं पर्यावरणीय जैव व अजैव घटकों के बीच तादात्म्य स्थापित करने का रहा है।

पर्यावरण संरक्षण में धर्म की भूमिका के मायने–पर्यावरण संरक्षण में धर्म की महती भूमिका रही है जिसे अग्रलिखित निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है.–

1– धर्म और पर्यावरण में एक गहरा सम्बन्ध है तथा सभी धर्मों का दृष्टिकोण प्रकृति के प्रति सकारात्मक रहा है। उदाहरण के तौर पर बौद्ध धर्म का मत है कि सभी जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों के जीवन एक दूसरे से सम्बंधित हैं इसलिए व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान करना चाहिए। इसी प्रकार बहाई धर्म का मानना है कि 'प्रा.तिक ऐश्वर्य और विविधता मानव जाति पर ईश्वर की कृपा है, अतः हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए।

2– वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण तथा भूमंडलीय ऊष्मन के नियंत्रण हेतु व्यापक प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इसके माध्यम से पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की राह अभी भी काफी दूर है। अतः उन लक्ष्यों को जन सामान्य की भागीदारी के माध्यम से संभाव्य बनाया जा सकता है।

3– विश्व के सभी समुदायों में धर्म एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और बड़ी संख्या में लोग धर्म में आस्था रखते हैं। इसलिये पर्यावरण संरक्षण में धर्म अहम भूमिका निभा सकता है और पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद मिल सकती है।

4– विभिन्न धर्मों में पर्यावरण संरक्षण हेतु अलग– अलग सुझाव दिये गये हैं परन्तु संरक्षण से सम्बंधित सभी धर्मों का अल्टीमेट गोल एकाध अपवादों को छोड़कर लगभग समान है।

हिन्दू धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण–

1– हिंदू धर्म में प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवी–देवताओं का रूप माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार जीवन पाँच तत्वों– क्षिति (पृथ्वी), जल (पानी), पावक (अग्नि), गगन (आकाश), समीर (हवा) से मिलकर बना है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

2– हिंदू धर्म में पृथ्वी को देवी का रूप माना गया है। इसके अलावा इसके विभिन्न अवयव जैसे. पर्वत, नदी, जंगल, तालाब, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि सभी को दैवीय कथाओं व पुराणों से जोड़कर देखा जाता है।

3– हिंदू ग्रंथ जैसे 'भगवद्गीता' में अनेक स्थानों पर कहा गया है कि– "ईश्वर सर्वव्यापी है तथा विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान है इसलिए व्यक्ति को सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिए।"

4– हिंदू धर्म में 'कर्म की प्रधानता' पर बल दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव प्र.ति पर भी पड़ता है, अतः मानव जाति को प्रकृति तथा उसके विभिन्न जीवों की रक्षा करनी चाहिए।

5– हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म (Reincarnation) पर विश्वास किया जाता है। इसके अनुसार, मृत्यु के बाद कोई व्यक्ति पृथ्वी पर विद्यमान किसी जीव के रूप में जन्म लेगा, यह उसके कर्मों पर निर्भर करता है इसलिए सभी जीवों के प्रति अहिंसा हिंदू धर्म का मुख्य सिद्धांत हैं। चूंकि भारत विविधताओं का देश है, यह विविधता सामाजिक, भौगोलिक व सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त है।

करीब 130 करोड़ की आबादी वाले देश में जहाँ सभी धर्म एवं संस्कृति को मानने वाले लोग रहते हैं तथा सनातन धर्म जो अपनी सामासिक विशिष्टता के चलते सभी धर्मों को सम्मान ब अपनत्व की दृष्टि से देखता है ऐसे में सभीचीन ही होगा कि भारतीय जनमानस में ग्राह्य सभी धर्मों का पर्यावरण के साथ जो स्थापित तादात्म्य है का उल्लेख यहाँ उचित है।

पर्यावरण संरक्षण एवं बौद्ध धर्म–

1– बौद्ध धर्म पूर्णतया प्रेम सद्भाव तथा अहिंसा पर आधारित है।

2– बौद्ध धर्म 'प्रतीत्यसमुत्पाद' पर आधारित है जिसे करण– कारण का सिद्धांत भी कहते हैं। इसे हिंदू धर्म के कर्म सिद्धांत के समान माना जा सकता है।

3– बौद्ध धर्म साधारण जीवन शैली को बढ़ावा देता है, जो 'सतत् पोषणीय विकास', Sustainable Develop.Goal के लिए आवश्यक है। अर्थात् मानव व्यवहार का प्रभाव उसके पर्यावरण पर पड़ता है।

4– बौद्ध धर्म सभी प्राकृतिक जीवों की परस्पर निर्भरता में विश्वास करता है और इसमें सभी जीव–जंतु, वनस्पतियाँ, नदी, पर्वत, जंगल आदि शामिल हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं जैन धर्म–

1. जैन धर्म में अहिंसा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है तथा किसी भी जीव–जन्तु, वनस्पति आदि को नुकसान पहुँचाना वर्जित माना गया है।

2. जैन धर्म में पंचमहाव्रत हैं– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रम्हचर्य। जैन धर्म को मानने वाले जीवन के सभी आयामों में इन पंचमहाव्रतों का अनुपालन करते हैं।

3. जैन धर्म के अनुयायियों के लिए प्रकृति व इसके सभी जीव जंतुओं को समान माना गया है तथा इनका संरक्षण और इनके प्रति समान व्यवहार करना इस धर्म की मूल शिक्षा है।

'पर्यावरण संरक्षण एवं सिक्ख धर्म'–

1. सिक्ख धर्म के अनुसार संसार में स्थित सभी वस्तुएँ ईश्वर की इच्छा के अनुरूप ही कार्य करती हैं तथा ईश्वर उनकी रक्षा करता है। सिक्ख धर्म की शिक्षा दिखावे के लिए किये गये व्यय का निषेध करती है।

2. सिक्ख धर्म के पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार, सभी जीव–जन्तु, वृक्ष, नदी, पर्वत, समुद्र आदि को ईश्वर का रूप माना गया है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु धार्मिक संस्थाओं द्वारा प्रयास–

वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु 'विभिन्न धर्मों के सहयोग से [Alliance of Religions and Conservation (ARC)] "अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंसर्वेशन" नामक संगठन की स्थापना 1995 में की गयी थी।

वर्ष 1986 में इटली के शहर असीसी में " विश्व वन्यजीव कोष " (World Wildlife Fund & WWE) द्वारा "असीसी घोषणा" (Assisi Declarations) का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के पाँच प्रमुख धर्मों– इसाई, हिंदू, इस्लाम, बौद्ध तथा यहूदी) के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था ताकि वे इस मुद्दे पर सुझाव प्रस्तुत कर सकें कि 'उनके धर्मों में प्रकृति संरक्षण हेतु क्या प्रावधान है तथा किस प्रकार वे योगदान कर सकते हैं?'

WWF तथा ARC के सहयोग से 'लिविंग प्लैनेट कैंपेन (Living Planet Campaign) नामक एक मुहिम शुरू की गई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

इसके तहत विश्व के प्रमुख धर्मों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की तथा उनकी इस प्रतिबद्धता को जीवंत पृथ्वी के लिए पवित्र उपहार' [Sacred Gifts for a Living Planet, का नाम दिया गया।

रिश्ता : प्रकृति पूजन और प्रकृति संरक्षण का– हिन्दुत्व वैज्ञानिक जीवन पद्धति है। प्रत्येक हिन्दू परम्परा के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है। हिन्दू दर्शन– "जियो और जीने दो" के सिद्धांत पर आधारित है। हिन्दू धर्म का सहअस्तित्व का सिद्धांत ही हिन्दुओं को प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। वैदिक वाङ्मयों में प्रकृति के प्रत्येक अवयव के संरक्षण और संवर्धन के निर्देश मिलते हैं।

हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है, इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है "वृक्षाद् वर्षाति पर्जन्यः पर्जादन्न सम्भवः" अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्न जीवन है। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते हैं "अरण्य ते पृथिवी स्योनमस्तु" स्रोत– भूमि सूक्त (अथर्ववेद) अर्थ :– तेरे जंगल हमारे लिए सुखदाई हों। यही कारण है कि हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रम्हचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है।

सनातनीय शास्त्रीय विधान में पर्यावरण– ऋग्वेद से लेकर वृहदारण्यकोपनिषद, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य वाङ्मयों में इसके संदर्भ मिलते हैं। 'छान्दोग्य उपनिषद में 'उद्दालक ऋशि' अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "वृक्ष जीवात्मा से ओत प्रोत होते हैं और मनुष्यों की भांति सुखःदुख की अनुभूति करते हैं।" हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है – '

"दशकूप समावापीः, दशवापी समोहदः।
दशहद समः पुत्रो, दशपत्र समोद्रुमः।।"

अर्थात –एक तालाब दस कुओं के बराबर होता है, एक जलाशय दस तालाबों के बराबर होता है। एक पुत्र दस जलाशय के बराबर होता है, और एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है। – (स्रोत–मत्स्य पुराण)

जलस्रोत : हिन्दू धर्म– जल स्रोतों का हिन्दू धर्म में विशेष महत्व है। ज्यादातर गांव–नगर नदी के किनारे पर बसे हैं। बिना नदी या ताल के गांव–नगर के अस्तित्व की कल्पना नहीं है। "आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षक होता है। छान्दोग्योपनिषद में अन्न की अपेक्षा जल को उत्कृष्ट कहा गया है। महर्षि नारद ने भी कहा है कि "पृथ्वी भी मूर्तिमान जल है। अन्तरिक्ष, पर्वत, पशु–पक्षी, देव–मनुष्य, वनस्पति सभी मूर्तिमान जल ही हैं, जल ही ब्रम्हा है।"

पर्वत शिखर : हिन्दू धर्म– महान ज्ञानी ऋषियों ने धार्मिक परंपराओं से जोड़कर पर्वतों की महत्ता स्थापित की है। देश के प्रमुख पर्वत देवताओं के निवास स्थान हैं। विन्ध्यगिरि महाशक्ति का वासस्थल है, कैलाश महाशिव की तपोभूमि है, हिमालय को तो भारत का किरीट कहा गया है। महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भवम् में हिमालय की महानता और देवत्व को बताते हुए कहा है–"अस्तुत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज" भगवान श्री कृष्ण ने गोवर्धन पूजा का विधान इसलिए शुरू कराया था क्योंकि गोवर्धन पर्वत पर अनेक औषधि के पेड़–पौधे थे, मथुरा के गोपालकों के गोधन के भोजन पानी का इंतजाम उसी पर्वत पर था। मथुरा–वृन्दावन सहित पूरे देश में दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा धूमधाम से की जाती है।

हिन्दू धर्म : जीव मात्र के कल्याण की चिंता– हमारे महर्षियों ने जीव–जन्तुओं के महत्व को पहचानकर उनकी देवरूप में अर्चना की है। मनुष्य और पशु परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं। हिन्दू धर्म में गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, हाथी, शेर यहाँ तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया गया है प्रत्येक हिन्दू परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है। चीटियों को आटा डाला जाता है, चिड़ियों और कौओं के लिए घर की मुंडेर पर दाना–पानी रखा जाता है। पितृपक्ष पक्ष में तो काक को बकायदा निमंत्रित करके दाना–पानी खिलाया जाता है।

सनातन (हिन्दू) धर्म से सम्बंधित त्यौहार : पर्यावरण संरक्षण– सभी त्यौहारों व परंपराओं के मूल में प्रवृति व जीव संरक्षण का संदेश है। नागपंचमी के दिन नागदेव की पूजा की जाती है। नाग विष से मनुष्य के लिए प्राणरक्षक औषधियों का निर्माण होता है ! नाग पूजन के पीछे का रहस्य यही है। हिन्दू धर्म का वैशिष्ट्य है कि वह प्रकृति के संरक्षण की परम्परा का जन्मदाता है। हिन्दू संस्कृति में प्रत्येक जीव के कल्याण का भाव है। हिन्दू धर्म के जितने भी त्योहार हैं, वे सब प्रकृति के अनुरूप हैं– "मकर संक्राति, वसंत पंचमी, महाशिव रात्रि, होली, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, वट् पूर्णिमा, ओणम् दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकूट, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली– तीज, गंगा दशहरा आदि सब पर्वों में प्रकृति संरक्षण का पुण्य स्मरण है।"

पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न आंदोलन– कोई भी सभ्य समाज, देश अथवा समुदाय आंदोलन तभी करता है जब

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वह तत्कालीन रूढ़िवादी परम्परा/समस्या से छुटकारा पाना चाहता है कोई आंदोलन जो परिवर्तोन्मुखी होता है उसकी प्रेरणा अपने गौरवशाली इतिहास व समृद्ध दर्शन से आती है। भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु कुछ अभूतपूर्व आन्दोलन भिन्न–भिन्न समयों पर हुए जो पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों नदियों आदि को बचाने के सनातनीय परम्परा के अनुरूप हैं। इन महत्वपूर्ण आन्दोलनों का उद्देश्य संक्षिप्त विवरण अग्रलिखित है–

विश्नोई आन्दोलन– किश्नोई भारत का एक समृद्ध सम्प्रदाय है जिसके अनुयायी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य–प्रदेश आदि में पाये जाते हैं। श्रीगुरु जम्भेश्वर को विश्नोई पंथ का संस्थापक माना जाता है। इस सम्प्रदाय के संस्थापक ने अपने अनुयायियों के लिए 29 नियम बनाये। यह प्र.ति पूजकों का अहिंसात्मक समुदाय है। यह आन्दोलन बनों की कटाई के खिलाफ 1700 ई. के आस–पास ऋषि सोमजी द्वारा शुरू किया गया था। इस अन्दोलन में विश्नोई समुदाय के 363 लोग मारे गये थे। जब इस क्षेत्र के राजा को विरोध व हत्या का पता चला तो वह गाँव गये और लोगों से माफी माँगी तथा क्षेत्र को संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया।

चिपको आंदोलन– यह पर्यावरण रक्षा का आन्दोलन था जो भारत के उत्तराखण्ड राज्य में किसानों ने वृक्षों की कटाई के विरोध में किया था। आन्दोलनकारी वृक्षों पर अपना परम्परागत अधिकार जता रहे थे। इस आन्दोलन की उल्लेखनीय विशेषता इसमें महिलाओं की सक्रिय सहभागिता थी।

अप्पिको आन्दोलन– यह आन्दोलन भी चिपको आन्दोलन की तरह पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाया गया एक क्रांतिकारी आन्दोलन था। जो कर्नाटक राज्य में पर्यावरण प्रेमियों द्वारा किया गया।

साइलेंटघाटी आन्दोलन– केरल की शांत घाटी 89 वर्ग– किमी. क्षेत्र में है जो अपनी घनी जैव–विविधता के लिए मशहूर है। पश्चिमी घाट की कई सदियों पुरानी संतुलित समृद्ध परिस्थिति के संरक्षण हेतु यह आन्दोलन चलाया गया।

जंगल बचाओ आन्दोलन– आदिवासी परम्परा में पर्यावरण सहित सभी प्रा.तिक चीजें, त्योहार या मेले पूज्यनीय होते हैं। अपने जंगलों को बचाने के लिए बहुत से कवीलाई आदिवासियों द्वारा उक्त आन्दोलन चलाया गया।

नर्मदा बचाओ आन्दोलन– यह आन्दोलन भारत में चल रहे पर्यावरण आन्दोलनों की परिपक्वता का उदाहरण है। इसने पहली बार पर्यावरण तथा विकास के संघर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनाया जिसमें न केवल विस्थापित लोगों बल्कि वैज्ञानिकों, गैर सरकारी संगठनों तथा आम जनता की भी भागीदारी रही। अब अंततः एक नजर उस सनातनीय विशेषता पर डालते हैं जिसका मूल मंत्र ही 'वसुधा को अपना परिवार मानना है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ''भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र'' वसुधैव कुटुम्बकम् सतान धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा है जो महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिवद्ध है। इसका अर्थ है – "धरती ही परिवार है।" यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।" (महोपनिषद् अध्याय –6, मंत्र – 71) स्रोत – विकीपीडिया

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में पर्यावरण एक अहम मुद्दा है तथा बढ़ता भूमण्डलीय ऊष्मन, ग्रीन–हाउस गैसों का प्रभाव, जैव विविधता संकट तथा प्रदूषण को नियंत्रित करना आज के दौर की मुख्य चुनौतियाँ हैं। ऐसे में सनातन (हिंदू) धर्म की यह अनूठी विशेषता उल्लेखनीय है जहाँ वायु, जल, आकाश, वर्षा, वृक्ष, नदियाँ, पर्वत, जानवर (वृषभ, गाय) आदि में किसी को माँ, भगवान तो किसी को आदि शक्ति के अलंकरण से अभिहित (विभूषित) किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दृश्टि मैग्जीन (करेन्ट अफेयर्स, टुडे)
2. Drishti Official Website-www.drishti.com
3- Danik Jagran (दैनिक पत्र), Jagranjosh.com
4- www.wikipedia.com
5. महाउपनिशद, अध्याय–6 मंत्र–71
6. भूमिसूक्त (अथर्ववेद), मत्स्यपुराण (ष्लोक)
7. UN official website, + UNESCO-unesco.org
8. कुमारसम्भवम् (कालिदास)
9. महाभारत (वेदव्यास प्रसंग)

*****